RNI NO. DELHIN/2012/47450

मासिक
साहित्य पत्रिका

विशेषांक
अप्रैल 2024

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

कवितावली

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

मासिक
साहित्य पत्रिका

कवितावली

विशेषांक

राजीव निशाना
समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

राजीव निशाना
समूह संपादक

धन्यवाद संदेश

समाचार वार्ता समूह की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष साहित्य पत्रिका कवितावली के सफल प्रकाशन के अवसर पर सभी कवियों एवं साहित्यकारों को हार्दिक शुभकामनाएं। इसी के साथ ही मैं सभी कवियों एवम् साहित्यकारों का इस मासिक साहित्य पत्रिका कवितावली में उनके योगदान के लिए धन्यवाद करते हुए भविष्य में भी ये आशा करता हूँ कि आप सभी का स्नेह और योगदान भरपूर मात्रा में ऐसे ही बना रहेगा। अन्त में मैं हमारे इस समाचार वार्ता की पत्रिका कवितावली के मुख्य संपादक सुरेश पुष्पाकर जिनके अथक प्रयासों के बिना यह संभव नहीं था कि इस पत्रिका को सफलता पूर्वक समय पर प्रकाशित किया जा सके। सुरेश पुष्पाकार जी का समाचार वार्ता परिवार की तरफ से मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

आपका भवदीय

राजीव निशाना

समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

संपादक की कलम से

कभी कल्पना की उड़ान, कभी धरातल का सत्य ! साहित्यकार और कलाकार पूरा जीवन अपनी कल्पना और अनुभूतियों को पाठकों एवम् दर्शकों के सम्मुख रखता चला आया है। शांति काल हो या युद्ध काल कलाकारों और साहित्यकारों ने समाज को प्रेरित करने और सदैव उसमें चेतना जाग्रति का कार्य किया है।

कलाकार द्वारा कैनवस पर अभिव्यक्ति से भरे ब्रश द्वारा रंग हों या साहित्यकार द्वारा कागज़ पर कलम द्वारा उकेरे गये शब्दों की तरंग हो। केवल यह रंग तरंग ही कलाकार एवम् साहित्यकार के जीवन का उद्देश्य नहीं होता अपितु समाज का मार्ग दर्शन करते रहना ही इनको आत्म संतुष्टि प्रदान करता है। पाठकों का केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु उन्हें उच्च दर्शनशास्त्र से अवगत करवाने वाले कवियों एवम् साहित्यकारों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए उनकी इस साधना को मैं नमन करता हूँ। कवियों एवं साहित्यकारों को मंच प्रदान करने की दिशा में यह मासिक साहित्य पत्रिका कवितावली एक प्रयास है। सभी कवियों एवं साहित्यकारों से पूर्ण सहयोग की आशा और अपेक्षा करता हूँ।

आपका भवदीय
सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मासिक साहित्य पत्रिका

कवितावली

क्र. सं	कवि एवं साहित्यकार नाम	स्थान	पृष्ठ संख्या
01	सतपाल सिंह	....पंचकूला, हरियाणा	06
02	अलका कांसरा	....चण्डीगढ़	07
03	विजय कपूर	....चण्डीगढ़	08
04	डॉ0 दलजीत कौर	....चण्डीगढ़	10
05	विमला गुगलानी	....चण्डीगढ़	12
06	निर्लेप हीरा	....दिल्ली	14
07	गीता मंजरी मिश्र (सतपथी)	....दिल्ली	16
08	नीरू मित्तल 'नीर'	....पंचकूला, हरियाणा	18
09	डॉ0 दीपाली मिरेकर	....विजयपुर, कर्नाटक	19
10	हरी राम यादव	....अयोध्या, उ. प्र.	20
11	साहिल	....दिल्ली	21
12	पालम सैनी	....गाज़ियाबाद, उ. प्र.	23
13	कर्मवीर मित्तल	....दिल्ली	25
14	बाल कृष्ण गुप्ता 'सागर'	....पंचकूला, हरियाणा	26
15	रश्मी शर्मा	....मोहाली, पंजाब	28
16	तरूणा पुंडीर 'तरूनिल'	....दिल्ली	30
17	सीमा गुप्ता	....पंचकूला, हरियाणा	31
18	प्रेम विज	....चण्डीगढ़	33
19	डॉ0 अरूण कुमार त्रिपाठी	....प्रयागराज, उ. प्र.	34
20	संतोष गर्ग	....पंचकूला, हरियाणा	35
21	शिल्पा गुप्ता	....दिल्ली	36
22	नीतू गर्ग	....ग्रेटर नोएडा, उ. प्र.	37
23	सुभाष भास्कर	....लंदन, इंग्लैण्ड	38
24	आशिमा राज वार्ष्णिय	....बैंगलोर, कर्नाटक	39
25	सुरेश पुष्पाकर	....लीसेस्टर, इंग्लैण्ड	40

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

सरस्वती वंदना

सतपाल सिंह

वाणी विराजिनी सरस्वती मैया,
वंदन करता मैं तुझे हे ।
सब पर कृपा हस्त तुम रखना
वाणी विराजिनी मैया हे ।
लेखनी को सदा चलने देना,
वाणी विराजनी मैया हे ।
वाणी विराजिनी सरस्वती मैया,
वंदना करता मैं तुझे हे ॥

मुख से सदा उचित ही निकले,
ऐसा वर तू सबको दे ।
मुख से सदा मधुर ही निकले,
वाणी विराजनी मैया हे ।
वाणी विराजिनी सरस्वती मैया,
वंदन करता मैं तुझे हे ॥

वीणा वादिनी सरस्वती मैया
चरणों की धुली दे दे,
वीणा की झंकार भर दे,
मन प्रफुल्लित कर दे हे ।
वाणी विराजिनी सरस्वती मैया,
वंदन करता मैं तुझे हे ॥
हंस वाहिनी सरस्वती मैया,
वंदन करता मैं तुझे हे ।
चरणों में रख लो मुझे अब,
हंस वाहिनी मैया हे ।
तेरी निश दिन स्तुति करूं मैं,
हंस वाहिनी मैया हे ।

वाणी विराजिनी सरस्वती मैया,
वीणा वादिनि सरस्वती मैया,
हंस वाहिनी सरस्वती मैया,
दर्शन दे दो अब तो हे ।
पलकें बिछाए बैठे हैं हम,
कृपा कर दो अब तो हे ।
वाणी विराजनी सरस्वती मैया,
वंदन करता मैं तुझे हे ।

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

अलका कांसरा

मुलाक़ात खुद से

चुपचाप बैठे बैठे
आज यूँ ही खुल गई
ज़िन्दगी की किताब
और मैं पढ़ती चली गई
एक के बाद एक
पन्ना पलटती गई
ज़िन्दगी की किताब
आईना बन गई
मुझे मेरा ही अक्स
दिखलाती गई
मुझ से मेरी ही
मुलाक़ात करवाती गई
क्या सोचती हूँ
क्या चाहती हूँ
चुपके से कान में
बतलाती चली गई ।

, • • • • • • ,

एक अर्धविराम से दूसरे अर्धविराम
के बीच चलती ज़िन्दगी
हर अर्धविराम कुछ खट्टी कुछ मीठी
यादें छोड़ जाता है
कुछ अनुभव और कुछ सीख
दे जाता है
और दे जाता है जन्म
बहुत सी
संभावनाओं और आशाओं को
इस भागती ज़िन्दगी में
कब रुक जाए
ज़िन्दगी की घड़ी
कब लग जाए पूर्णविराम
यह तो जानता है
केवल ऊपर वाला ही

कागज़ का टुकड़ा

क्यों समझ लेते हैं
औरत के दिल को
एक कागज़ का टुकड़ा
और फेंक देते हैं
तोड़ मोड़ कर
किसी कोने या डस्टबिन में
यह औरत ही है
जो हर नई सुबह के साथ
उस कागज़ को खोल
हाथ से सहलाती है
सिलवटें निकाल कर
बड़ी उम्मीद से
बड़े हौसले से
बड़ी हिम्मत से
पढ़ना शुरू कर देती है
कागज़ पर लिखे
सपने अपने ।

विजय कपूर

तुम्हीं बताओ

तुम्हीं बताओ
तुम्हें यह कैसे याद रहता है
कि तुम्हें भूलने की बीमारी है,
थोड़ा आसान करके पूछूं,
क्या बढ़ जाने पे ही
आती है समझ
कि इतनी सारी है,
फिर भी
नहीं दर्ज होंगी
बहुत सी बातें
इतिहास में,
यह भी
कि तुम भी कभी
चले होवोगे
ठंडी घास में,
आठ से साठ तक
टाट से ठाठ तक,
जीवन यात्रा के अनेक पड़ाव हैं,
ढेरों खुशियों के बीच
अनेक घाव हैं,
धारदार होके तार तार
होता है
और भी धारदार,
नशे पे जब चढ़ता है नशा
तो उतरता है खुमार
जो चढ़ जाता था
बार बार ।

प्रेम और अकेलापन

उसने कहा
रिश्ते पर नए सिरे से
करना होगा विचार,
जो लिखी जा रही थी
एक लम्बी कविता
वो रुक गई यकायक,
मैंने सिर आसमान की ओर किया
तो देखा उसका अकेलापन
जो डैने फैलाए
फड़फड़ा रहा था,
मन पसीज आया
कि वो कभी नहीं सोता है,
पर मुझ में
कविता का कोई स्पंदन
ध्वनित नहीं हुआ,
लगा कि अब
आंसू बहाने की
फुरसत नहीं,
अब नहीं चला जाएगा
किसी के भी चरण चिन्हों पर,
फ्रेम से बाहर होते ही
मैं बहस से बाहर हो गया
और प्रेम से बाहर होते ही
बंद हो गए
आदान प्रदान के सभी विकल्प,
अब नहीं होना है मुझे
कुछ भी
प्रतिफलित करने में समर्थ,
फिर भी अतीत में जाकर
गुम नहीं होना चाहता हूं मैं,
बस नहीं रहेगा तालुक
किसी भी मीठी याद से,
किसी भी
वाद-विवाद से।

-विजय कपूर

निहारता मुट्ठियां

कर्म-भूमि में निहित रहता है
जैसा हुआ वैसा होना,
बीते हुए की छाप तो
नहीं छूटेगी
समय हो या पिता,
समय और पिता
जिनसे होकर
उन्हीं का बना रहता है हाथ,
घटित होते कर्म
समय-समय पर
क्रमबद्ध आगे खड़े
कर रहे होते हैं इंतज़ार,
एक मुट्ठी में उजाला
दूसरी में अँधेरा लिए,
मैं हर उस साक्षात्कार में
नन्हा सा बालक बन
निहारता हूँ मुट्ठियाँ
पास फेल गिनता हुआ,
यह जानते हुए कि मिलेगा वही
जिसके वास्ते जैसा यतन किया मैंने।

सालों की चुप्पी

सालों की चुप्पी में
एक जंगल है
निरंतर फैलता हुआ,
साहचर्य की गर्माहट में
एक सी विचारधारा
बुनता हुआ,
पता नहीं अंधेरों में
कौन लटकते हैं
उसके पेड़ों से,
पता नहीं क्यों
नहीं सुनाई पड़ती हैं
अंधेरों को चीरती
उनकी आवाजें,
दिखता तो है वो
भेड़िए सा,
कि खलयान में बिछे
उसकी खाल,
सोना है उसे
कि रात
अपने पहर न बदले,
सरपरस्त अपना ज़हर न बदले।

(लघुकथाएं)

डॉ० दलजीत कौर

भ्रम

वे सज-धज कर बल खाती हुई आती हैं और अपने जैसी किसी कवयित्री से नागिन-सी लिपट जाती हैं। कविता मंच पर बैठी है। उस पर उनका ध्यान नहीं है। वे आपस में सूट -साड़ी पर बात करती हैं। नेलपालिश की तारीफ़ करती हैं। जूते -चप्पल की तारीफ़ करती हैं।

वे हॉल से बाहर जा कर खुल कर गप्पें मारती हैं। पाउट बना कर फ़ोटो खींचती हैं। पेड़ के नीचे , दीवार के पास , सीढ़ी पर बैठ कर तस्वीरें लेती हैं। कविता अंदर बैठी है और वे बाहर। उन्हें कविता से कुछ लेना -देना नहीं।

काव्य -गोष्ठी के समाप्त होने पर वे माइक के सामने खड़ी होकर फ़ोटो खिंचवाती हैं। वे फ़ेसबुक पर कई फ़ोटो डाल कर लिखती हैं -"मंच पर कविता पढ़ते हुए।"

न कविता उन्हें जानती है और न वे कविता को। वे खुद को महादेवी वर्मा समझने का भ्रम लेकर सभागार से बाहर निकल जाती हैं।

सपना

पिता अपनी जवानी में गाँव से शहर आए। बहुत परिश्रम से उन्होंने घर बनाया। बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। उनका सपना था कि बच्चे पढ़ -लिख कर कामयाब हों। उनसे भी बड़ा घर व गाड़ी लें। कैसी भी परिस्थिति आई पर उन्होंने अपनी पुश्तैनी ज़मीन नहीं बेची।

समय का चक्र कुछ ऐसा रहा कि बेटा उनका नाम रौशन नहीं कर सका। समय की अंतिम बेला में पिता ने सब ज़मीन-जायदाद बेटे के नाम कर दी। बेटे ने पुश्तैनी ज़मीन बेचकर बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ ख़रीदीं और बड़ा घर बनवाने लगा।

पिता को पता चला तो उन्होंने कहा -"यह क्या कर रहे हो ? पुश्तैनी ज़मीन हमने नहीं बनाई। उसे बेचने का भी हमें हक़ नहीं। बस उसे अगली पीढ़ी को सौंप सकते है।"

बेटे ने जवाब दिया -"मैं तो आपका ही सपना पूरा कर रहा हूँ।"
पिता तब से किंगकर्तव्य विमूढ़ हैं।

कवितावली

-डॉ० दलजीत कौर

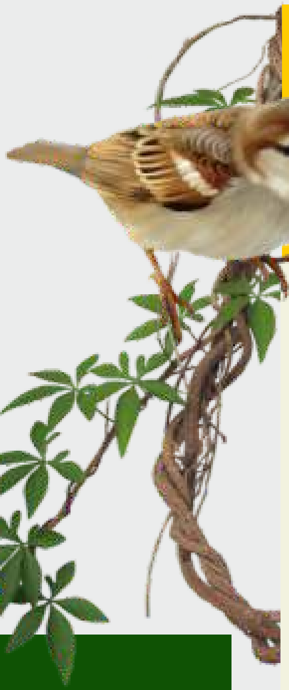

लापता है बसंत

बसंत आया तो है
डाली पर फूल
मुस्काया तो है
वीरान पेड़ पर
हरी कोंपलें
फूटी तो हैं
बसंत आया तो है -

कोयल ने बसंती गीत
गया तो है
सरसों ने पीला खेत
महकाया तो है
बसंत आया तो है -

बसंती चुनार
पगड़ी का रंग
लहराया तो है
मगर लापता है
स्नेह के फूलों का बसंत

नहीं फूटती
प्यार की कोई लता
नहीं आता
अपनेपन का बौर
जाने क्यों ?
बसंत आकर भी
नहीं आता

लापता है बसंत
मेरे मन का बसंत
तेरे मन का बसंत
लापता है बसंत

फूटती है कविता

पीड़ाएँ जब
नहीं लेने देती
मन को चैन
तब फूटती है
कोई कविता

अपनों से जब
ठगे जाते हो
सर रखने को
नहीं रहता कंधा
तब फूटती है
कोई कविता

सूख जाएँ जब
आँखों के आँसू
दिखा न पाओ
हृदय के आँसू
तब फूटती है
कोई कविता

सपने जब
बिखर जाएँ सब
जुटा न पाओ
सपने देखने की हिम्मत
तब फूटती है
कोई कविता

मनुष्यता जब
खो दे मायने
बचा न पाओ
चाह कर भी
तब फूटती है
कोई कविता

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

मां तो मां है-

विमला गुगलानी

मधुर की दुर्घटना में अचानक मौत से तीस साल की नीति पर तो दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। पांच साल का गौतम और एक साल की नव्या। उफ्फ परिवार के इलावा भी जो सुनता आंसू छलकाता, मगर अब क्या किया जाए। होनी को कौन टाल सकता है। समय तो अपनी गति से चलता ही रहता है। मधुर के स्थान पर पढ़ी लिखी नीति को सरकारी नौकरी मिल गई। मायके ससुराल वालों ने भी काफी सहयोग दिया, मगर बच्चों को मां बाप दोनों का प्यार देना, नौकरी , घर बाहर के काम, बच्चों की शिक्षा , सब कुछ इतना आसान नहीं था। नीति पर दूसरी शादी का दवाब भी डाला गया परंतु उसने साफ मना कर दिया था।

उसने अपनी जिंदगी मधुर की यादों के सहारे और बच्चों के सही पालन पोषण पर ही न्यौछावर करने का सोच लिया था।

समय कहां ठहरता है, वो तो अपनी गति से चलता ही रहता है। दोनों बच्चों को उच्च शिक्षा मिली। नव्या की शादी पहले हो गई। गौतम ने अपनी एक सहकर्मी को पंसद कर लिया। नीति भी रिटायर हो गई। सेवामुक्ति के बाद मिले रूपयों से नीति ने सब लोन क्लीयर कर दिए। दोनों बच्चों की पढ़ाई, शादी , घर बनाने में नीति ने कितनी मेहनत की सिर्फ वही जानती थी। काम की अधिकता के कारण अब वो बीमार भी रहने लगी थी। उसने सोच रखा था कि अब वो आराम करेगी। गौतम और बहू तन्वी काम पर निकल जाते। घर की सारी जिम्मेवारी नीति पर ही थी। मेड थी पर घर में हजारों काम होते है। तन्वी को न तो घर के काम में रूचि थी और उसका स्वभाव भी तेज। नीति हर तरह से सांमजस्य बिठाने की कोशिश करती मगर तनाव का माहौल ही बना रहता।

सारे दुःख सह कर भी चट्टान की तरह खड़ी रहने वाली नीति एक साल के भीतर ही टूट गई। बहू का व्यवहार असहनीय हो रहा था। इसी बीच आरव का जन्म हुआ। नीति ने सोचा कि शायद अब माहौल ठीक हो जाएगा। नीति अक्सर सोचती, क्या इसी दिन के लिए उसने इतने दुख सहे। उसने लगभग सारे पैसे भी बच्चों पर ही खर्च कर दिए थे, और उसकी पेंशन भी नहीं थी। गौतम चाहते हुए भी कुछ कह न पाता। पहले तो बच्चों के साथ नव्या भी आती थी तो माहौल खुशी से भर जाता, मगर अब उसका आना भी बहुत कम था, तन्वी को उसका आना भी पंसद नहीं था। गुस्से में तन्वी सारा गुस्सा आरव पर उतारती। गौतम को मां की कुर्बानियों का पता था और वो मां के लिए बहुत कुछ करना चाहता था मगर तन्वी को इससे कोई मतलब नहीं। नीति को अक्सर बुखार, खांसी, शरीर में दर्द और गठिया की शुरूआत हो चुकी थी। न उसे ढ़ग का खाना मिलता और न ही दवा दारू। सबसे बड़ी बात कई कई दिन तक गौतम भी उससे बात न करता। आरव को भी देखने को वो तरस जाती। बस अपने कमरे में ही रहना उसका नसीब बन चुका था। उसको पढ़ने का शौक था मगर कोई कितना पढ़े और कितना टी वी देखे। पहले तो कभी कभार साथ वाले पार्क में टहलने निकल जाती मगर अब चलना भी मुशकिल था।

नव्या का फोन आता तो वो कुछ न बताती। बेटी को वो परेशानी में डालना नहीं चाहती थी, परंतु नव्या सब जानती थी। नीति के कुछ पैसे और गहने थे बैंक में। उसने तो ये सोच कर वो रखे थे कि तीज त्यौहारों पर बच्चों को सरप्राईज गिफ्ट दिया करेगी, कभी घूमने जाऐगी बच्चों के साथ। पर ऐसा मौका ही नहीं मिला। इसी प्रकार पांच साल और निकल गए। बच्चों की छुट्टियां हुई तो नव्या का मन मां से मिलने को हो आया। दो साल हो गए थे मां को देखे। मगर जब मां की हालत देखी तो उसका दिल रो पड़ा। काश कि वो मां को अपने साथ ले जा सकती, परंतु उसका सयुंक्त .....

...मां तो मां है–

– विमला गुगलानी

.....
परिवार था। सास ससुर के इलावा जेठ जेठानी और बच्चे भी थे। नीति भी कहां जाने को तैयार थी।नव्या ने कई बार पैसे देने चाहे मगर नीति ने साफ मना कर दिया था।

कुछ सोच कर नव्या ने गौतम से कहा कि इस माहौल से तो अच्छा है कि मां को वृद्धआश्रम में ही छोड़ दिया जाए। अपने हम उम्र लोगों में कुछ तो मन बहलेगा। तन्वी की रोज की किचकिच से तंग आ चुके गौतम को भी यह सही लगा। नीति वृद्धआश्रम पहुंच गई। साल में एक दो बार कोई मिलने आ जाता। नीति अब यहां के माहौल की आदी हो चुकी थी। इस बार जब गौतम आया तो पता नहीं कैसे तन्वी भी साथ आ गई। मां ने उसे बैंक में पड़े पैसो और गहनों के बारे में बताया और ये कहा कि वो उन पैसों से इस आश्रम में कुछ सहूलतें जैसे कि टीवी ऐसी अच्छा फर्नीचर वगैरह मुहैया करवा दे क्योंकि कल को आख भी क्या पता अपने मां बाप को यहीं छोड़ जाए। वो तो किसी तरह भी रह लेगी मगर उपर जाकर भी अपने बच्चों को दुःखी देखकर उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। मां तो आखिर मां है, वो तो मरते मरते भी बच्चों का बुरा नहीं चाहेगी।

गौतम को बहुत शर्मिंदगी हुई, तन्वी को भी शायद कुछ अक्ल आ गई थी। उन्होनें बहुत चाहा कि मां घर वापिस आ जाए, मगर नीति राजी नहीं हुई। उसने दोनों के सिर पर प्यार से हाथ रखा और अपने कमरे की ओर चल दी।

खबर

उनके आने की खबर आई है,
दूर होने वाली मेरी तन्हाई है।

फिजा में फैला हुआ जैसे घना कोहरा था,
शबनमी बूंदों पे जैसे किसी का पहरा था,
फिर से मौसम लेने वाला अब तो अगड़ाई है।

उनके आने की खबर आई है,
दूर होने वाली मेरी तन्हाई है।

फूल पर भंवरें गुनगुनाते है,
चूम कलियों को मुस्कराते है,
बजने वाली जल्दी जैसे कोई शहनाई है।
उनके आने की खबर आई है,
दूर होने वाली मेरी तन्हाई है।

लट को छू के हवा यूं जाती है,
गीत सरगम से वो भी गाती है,
खुशबू गजरे की भी जैसे अब तो महकाई है।

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

निर्लेप होरा

अब हम चेतें

भीड़ भरी दुनियां में बन्दे
कैसे तू रह पाएगा
कहीं पे धक्का कही पे मुक्का
तू खाता ही जायेग
अब तो चेत ले तू कल की
यूँ विचार इक पल की
जंगल घटते खेत हैं जलते
पानी को भी लोग तरसते
दाना दाना होगा मोती
महंगा लोटा और धोति
छोड़ धरती का संहार
वरना होगा हाहाकार
भूखे पेट बिलखते बच्चे
करेंगे चोरी जो थे सच्चे
मेंहगा पानी सस्ती जान
नहीं मिलेगा जीवनदान
लालच छोड़ जगत की सोच
समय न सुनेगा किसी का दोष
वर्तमान का कर ले विचार
यदि चाहे भविष्य सँवार॥

हाय रे पैसा

देखो ! लोगो अजब है पैसा
कैसे कैसे रंग दिखाए
थोड़े से न चले गुज़ारा
लालच दिन-दिन बढ़ता जाए
झूठ बुलवाये, पाप करवाये
भाई से भाई लड़वाये
युग बदला, समाज भी बदला
पर इसका व्यवहार न बदला
सदियों से इसका बोलबाला
यही है चाबी यही है ताला
औरत को कोठे पर बिठवाये
मां से बच्चे को छुड़वाए
मन्दिर से भगवान चुरवाये
कैसे-कैसे अधर्म करवाये
बोले संत और ज्ञानी
माया साथ न जानी

-निर्लेप होरा

मेरे चन्द सवाल कुदरत से

एक दिन दिल में ख्याल आया
कुदरत से कुछ पूँछों
पहले तो पहाड़ों से पूछा
तुम्हें तो अडिग कहतें हैं।
तुम क्यों टुकड़े-टुकडे हो कर
लुड़क रहे हो ।
उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया ।
मैने समुद्र से पूछा तुम्हें तो
शांत और गम्भीर कहतें हैं
तुम क्यों चंचल हो गए
कोई जवाब नहीं मिला
मैंने फिर नदियों से पूछा
तुम क्यों अपनी सीमाएँ तोड़
कर तबाही मचा रही हो
नदियां भी चुप रहीं
अब बादलों से पूछा मीठी
पुहार देने वाले
तुम क्यों गुस्से से फट पड़ते हो
कोई जवाब नहीं
मैंने सोचा आसमान की
बिजली से पूँछों
ए ! बादलों से गले मिलने वाली
क्यों नीचे आकर सब कुछ
खाक कर देती हो
उसने भी जवाब नहीं दिया
अब आग से पूछा
सर्दी में हमें ताप देने वाली
तू क्यों बावली हो गई
अपने पेड़ों का नाश कर रही है।

तू तो इन्ही की जाई है।
यहां भी निराशा मिली
अब मैंने बहती हवा से पूछा
तू तो जीवनदायनी है
तू ज़हरीली क्यूँ हो गयी
उत्तर नहीं मिला
अब मैंने आकाश से पूछा
तेरे टिमटिमाते तारे कहाँ गए
उसने भी जवाब नहीं दिया
समाज में हो रही घटनाओं
से पूछा क्यों चारों ओर अशांति
मार-काट,लोभ,लालच
हिंसा,दुराचार हो रहा है

जब सबने मुझे जवाब नहीं दिया
तो मेरी अंतरात्मा बोली
उनसे क्या पूछती है नादान
यह सब तुम इंसानो के
कर्मो का फल है ।
तुम सबने प्रकृति पर इतना
अत्याचार किया है
उसे द्रोह लिया है
उसे इतना पीड़ित किया है
अब उसके सबर का बांध टूट गया है ।
प्रकृति ने अपने नियम तोड़ डाले हैं ।

अभी भी तुम्हें सीख नहीं मिली
तो मुझसे एक शेर सुनो
इबतदा इश्क है रोता है क्या
आगे-आगे देखिये होता है क्या ॥

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

कवि की कविता

कवि की कविता का आलाप
कहाँ शुरू फिर अंत कहाँ ?

कितनी अनकही कथा समेटे
कितनी अपरिचित कथा लपेटे
कहीं उद्वेग का ज्वार लिए
कहीं आवेग भाटा गंभीर,

मुग्ध गति से चलती कहाँ
कहाँ शुरू फिर अंत कहाँ ?

रुन-झुन नूपुर शब्द नहीं
कल्लोलिनी सी कलकल भी नहीं
निशब्द स्रोत सी बहती रहती
रजत धारा ज्यूं रेखा खींचती

असहज मन का बिम्ब यहाँ
कहाँ शुरू फिर अंत कहाँ ?

लोल तारक सी अचंचल पीड़ा
अति विस्तृत भू भाग आ पड़ा
तभी स्रोत को गति मिली
अमराई में मंजरी खिली

बद्ध आतुरता उन्मुक्त यहाँ
कहाँ शुरू फिर अंत कहाँ?

सरिता चलती सागर तक
अंतहीन पथ चलती कविता
कवि हृदय में पीड़ा जबतक
कलम लिखेगी कविता तब तक

दर्द बनाता गीत नया
कहाँ शुरू फिर अंत कहाँ ?

आकुल हृदय व्याकुल बेदना
अद्भुत कवि,आश्चर्य कविता
व्यथा जहां मिटाती व्यथा
निष्कपट गीत अंतर छूता

अम्बर बरसाता अमृत जहाँ
शुरू नहीं ना अंत वहाँ ■■■

गीता मंजरी मिश्र
(सतपथी)

होली

होली अकेली
मत खेल पगली
भीग जाएगी अपनी चोली,
प्रथा पुरानी
बनी राहपर
यमुना तटपर चल बावली ।
बजा नूपुर तुम
बजा किंकिनी
चलो बुलाकर सखी सहेली,
भरी पिचकारी
रंग छलकता
भीगे अंग,बन रंग रंगीली।
मन भीगे
न भीगे, क्या जाने
घोर मस्त कान्हों की टोली
फाग लगी या
आग लगी
छोड़ो उलझी डोर पहेली ।

या फिर सुलगा
तेरे अंदर
छिपी हुई तुम आग अकेली
छोड़ दो ऊँगली
सूरज की अब
इन्तज़ार क्यों भोर की लाली?
तू भारत की
अटल अटारी
ओछी पिचकारी से हारी ?
काली चादर
ओढ़ने वाले
गिनने आए दाग तुम्हारे?
भीगे चादर
अपने रंग में
आज अकेली खेल री होली
रंग दो सागर
रंग दो अम्बर
उड़ा-उड़े अबीर की थाली ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

- गीता मंजरी मिश्र
(सतपथी)

यात्रा

कौन है
अन्तिम यात्रा पर
सफ़ेद कफ़न से लिपट कर ?
इन राहों में अब-
बढ़ती जा रही है
शवों की संख्या ।

मरघट में भारी जमघट !
कैसी मौत
आजकल हर तरफ़ नज़र आती है
साथ चलने वालों में
ज़रा भी ग़म नहीं ??

इनसानियत के कंधे पे
ईमानदारी की लाश है
सफ़ेद झूठ के कफ़न से लिपट कर,
आजकल रिश्वत की दुधारी तलवार
खूब चमकती है हर तरफ़!

ईमानदारी बेबस बेचारी
सरे आम खून होकर
बनती जा रही है लाशों की ढेरी ।

जगह चाहिए

फूलों को खिलने के लिए
पंखुड़ियों को फैलने के लिए

जगह चाहिए।

पेड़ों को, जड़ों को,पत्तियों को भी
जगह चाहिए
एक भ्रूण को जन्म से पहले भ्रुणाशय में
जन्म के बाद मां की गोद में

जगह चाहिए।

मनुष्य को मनुष्य के साथ
रिश्ते बनाने निभाने
दोनो के बीच कुछ जगह तो चाहिए ही
संस्कृति सभ्यता सबको
सही विकास के लिए

जगह चाहिए।

मानवता को अंकुरित प्रस्फुटित
पल्लवित होने के लिए

जगह चाहिए।

संकुचित सोच संकुचित विचार
संकुचित परिधि की जननी है
हृदय इतनी विस्तारित हो कि
हर किसी को हर रिश्ते को
हर जाति को हर एक मजहब को
खुलकर खिलकर जीने की जगह मिले

जगह तो हमे भी चाहिए ।

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

मदारी

(लघुकथा)

नीरू मित्तल 'नीर'

साहब ने जैसे ही ऑफिस में प्रवेश किया प्रदीप ने आगे बढ़कर उनकी शर्ट की प्रशंसा करते हुए कहा- "सर आप पर यह रंग कितना अच्छा लग रहा है।"

"तुम्हारी पसंद भी तो बहुत अच्छी है, देखना... कोई और रंग में भी मिले तो ले आना," साहब ने गर्दन हिलाते हुए कहा।

अभी परसों ही शाम को पांडे जी ने साहब के घर हाजिरी दी थी।

"सर मेरा भाई साउथ गया था, भाभी के लिए कांजीवरम की तीन साड़ियां लाया है।"

और कल साहब ने पांडे जी की तारीफ में इतने पुल बांधे थे कि सभी लोग समझ गए कि साहब के घर माल पहुंच चुका है। प्रदीप भला क्यों पीछे रहता? कल ही शाम एक ब्रांडेड शर्ट लेकर पहुंच गया। दोनों में होड़ सी लगी हुई थी कि कौन साहब को ज्यादा गिफ्ट देगा। आखिर प्रमोशन का मामला जो था।

जब मैं ऑफिस आ रहा था तो रास्ते में बंदर-बंदरिया का खेल दिखाते मदारी को देखा था। मैंने केबिन में बैठे साहब को देखा, लगा जैसे एक मदारी दो बंदरों को अपनी मुट्ठी में बंधी रस्सियों के इशारे पर नचा रहा है।

रूहानी होली

दहन कर दूं सब अपेक्षाएं
सब विकार सब लालच
चाहत द्वेष ईर्ष्या
अनैतिकता
मोह माया सब
होली दहन के साथ
तो मनाऊ
एक रूहानी होली

भरूं रंग सांसो में
सिमरन के
मन में अबीर प्यार का
भावनाओं में निर्मलता पानी की
चित्त में सर्व मंगल भावना
हृदय में प्रेम का रंग
और उंडेल सकूं जग में
तो मनाऊ
एक रूहानी होली

समझूं सबको एक बराबर
सबके हित पहले देखूं
भूलूं कौन जात पात है
सबका स्वागत हो मन द्वार
रंग लाल भक्ति का
हरा समृद्धि का
और पीला प्रेम का
उड़ा सकूं सब ओर
तो मनाऊ
एक रूहानी होली

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

सस्ते मेले की महंगी कुल्फी

(लघुकथा)

डॉ० दीपाली मिरेकर

यह कहानी एक ऑफिसर बेटा और किसान पिता की है। गांव के आंचल में पला बढ़ा बेटा शहर में ऑफिसर बनता है। एक छोटे से गांव से शहर तक का सफ़ल सफ़र रोचक है। बेटा भले ही शहर में नाम शोहरत कमाता है। परंतु अपनी गांव की सादगी से बिछड़ता नहीं है। सरल स्वभाव उच्च विचार का ऑफिसर बेटा एक दिन अपने गांव के मेले में अपने बीवी बच्चों के साथ खुशी खुशी आता है। व्यक्तित्व और सम्पति का धनी ऑफिसर बेटा पिता के समक्ष एक नन्ने बालक जैसे मेले में जाने के लिए बूढ़े पिता से पैसों की जिद्द करता है। पिता के आंखो में एक झिझक सी होती है। वह बेटे से प्यार से कहता है "बेटा में तुमे क्या दे सकता हूं ? " और कुछ सोचते हुए वह अपने एक पुराने पेटी में कुछ ढूंढता है। उस टूटी फूटी पेटी में उन थकी हथेली को छ: रुपए मिलते हैं। धुंधली आखों से पैसे के चिल्लर बार बार गिनते हुए उसका चेहरा मुरझा जाता है। उस पेटी में सिर्फ ५ रूपये थे। अमीर बेटे को मेले के लिए छ: रूपये कैसे दे दूं ? यह सोचते हुवे नि:शब्द होकर हाथ बांधे बेटे के समक्ष बूढ़ा बाप खड़ा रहता है।

दूर खड़ा हूवा बेटा यह सब देखता रहता है। बाप की बंधी मुट्ठी बेटा धीरे से खोलता है। "बाबा इस मुट्ठी में आपने मेरे खुशियों का पिटारा छुपाकर रखा है। आपके द्वारा मिला एक रुपए के समक्ष दुनियां की करोड़ों संपत्ति कौड़ी के मोल में है। बाबा क्या आपके बेटे को दो रुपए देंगे ? मुझे मेले में कुल्फी खानी है।"

बेटे की बात सुनते है पिता की आंखें भर आती है। बाप बेटे खुशी खुशी मेले में जाकर दो दो रूपये की कुल्फी ख़रीद कर फिर से अपनी दुनियां को जीते है।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अइहौ होली खेलन एहि बार

भरी रंग से हमरी पिचकारी,
बरसन को है एकदम तैयार।
यशोदानंदन कृष्ण कन्हैया,
अइहौ होली खेलन एहि बार।
संग ले अइहौ सब ग्वाल बाल,
औ ले अइहौ सब हुरियार।
खूब मचाएंगे धमा चौकड़ी,
करेंगे रंगों की खूब बौछार॥

रान पड़ोसी सबको रंगेंगे ,
बहायेंगे अबीर-गुलाल बयार।
रंग रंगने में जो आड़े आयेगा
उसको हम देंगे धक्का मार।
गले मिलेंगे हम हमजोली,
बहा देंगे गिले, प्रेम की धार।
चरण छुएंगे सब बडकों का,
लेंगे आशीर्वाद हाथ पसार॥

बच्चों के संग बच्चे बनकर,
खूब मचाएंगे चीख पुकार।
छोटे बड़े का भेद न होगा,
होंगे होली में सब हुरियार।
ग्राम देवता सारे खुश होकर,
करेंगे रंगो की अविरल बौछार।
हे नटवर नागर गिरधारी तुम ,
आओ गांव हमारे यहि बार॥

हरी राम यादव

रेजांगला के वीर बलिदानी

इतिहास लिख गये जो सीमा पर,
वह रणवीर अभीर बलिदानी थे।
जिन्होंने ने दस दस को था मारा,
वह अपने में खुद एक कहानी थे।
इरादे थे उन सबके फौलादी,
कर्तव्य उन्हें जान से प्यारा था।
यह देश हमारा अक्षुण्ण रहे,
मन में उन्होंने यही विचारा था।
सीमित संख्या थी सरहद पर,
साधन भी उनके सीमित थे।
पर हौसले बुलंद थे उन सबके,
और सबके साहस असीमित थे।
लड़ते लड़ते गोला बारूद चुका,
पर चुकी न हिम्मत उन सबकी।
निष्प्राण पाषाण का बाण बना,
सुला दिया दुश्मन को दे पटकी।
निशि में हमले पर हमले होते रहे,
पर हर हमले पर वह भारी थे।
जय हिन्द के बीर सिपाही वह,
दुश्मन के लिए तलवार दुधारी थे।
काट रहे बैनट से अरि शीशों को,
जैसे पकी फसल को काटे किसान।
कर दिया इकट्ठी लाशों को,
जैसे धन को करे इकट्ठा धनवान।

देख दहला उठा अरि का सीना,
अपनों की लाशों का बनता ढेर।
दहाड़ देखकर वह सकते में आया,
देखे न थे उसने जीवन में ऐसे शेर।
लड़ते लड़ते मिट गये वीर सब,
पर एक इंच भी हटे न पीछे।
अडिग हिमालय से खड़े रहे,
बंकर भी देख रहा आंखें मींचे।
देख वीरता दुश्मन सैनिक ने भी,
सम्मुख जिसके शीश झुकाया।
उन वीर, बहादुर, रणबांकुरों ने,
रेजांगला के बलिदानी नाम पाया।
कोटिश नमन वीरता को मेरा,
दुश्मन ने भी तुमको वीर लिखा।
अब तक के युद्धों के इतिहास में,
"हरी"ऐसा दृश्य पहली बार दिखा।
लिख गये कहानी जो तुम वीरों,
वह अब सेना का इतिहास बना।
रणनीति तुम्हारी, कौशल तुम्हारा,
और साहस बन गया लोहे का चना।
पढ़कर याद करेंगी पीढ़ियां देश की,
रेजांगला के तुम्हारे इतिहास को।
माथा टेक कर नमन करेंगी बार बार,
उस अहीरधाम भूमि खास को॥

साहिल की कलम से

साहिल

घर में कुछ पुराना सामान बाकी है
जाने किसका अधूरा अरमान बाकी है।

उड़ने की जुस्तजू अभी भी है जारी
अभी उस परिंदे में जान बाकी है।

ज़र उसे कभी खरीद नहीं सकता
जिस शख्स में थोड़ा ईमान बाकी है।

अभी तो ज़िन्दगी ने चलना सीखा है
परवाज़ को अभी आसमान बाकी है।

अभी तक अपनों ने ही धोखा दिया
उस फेहरिस्त में कोई अंजान बाकी है।

वो कहते हैं तुम आज खामोश क्यों हो
कैसे कहूँ की मुँह में अभी पान बाकी है।

किसी और का दर्द भी अपना लगता है
'साहिल' में अभी भी इंसान बाकी है।

मेरे सवालों का कभी तो जवाब देगा
जितने दिये ज़ख्म सभी का हिसाब देगा ।

प्यासा खड़ा हूँ बड़ी मुद्दत से मैं
कभी तो वो मेरे हाथों में आब देगा ।

कांटों से इस्तकबाल किया जिसने अभी तक
वो शख्स भी कभी तो खिला गुलाब देगा ।

जिसके दिल तक पहुंचने का रास्ता मैं ढूंढ रहा हूँ
एक रोज़ वही मुझे नक्शों वाली किताब देगा ।

अंधेरा हो गया है बादलों के घिर आने से
सब्र रखो 'साहिल' रोशनी आफ़ताब देगा ।

-साहिल

मेरे सफ़र को उसका मकाम नहीं मिला
सारे शहर में तेरा मकान नहीं मिला ।

इश्क में कुछ यूं हुआ मेरे साथ क्या कहूँ
बगिया से टूटे फूल को गुलदान नहीं मिला ।

नसीब ने भी ये खेल कैसा खेला था
दिल तो मिले पर खून खानदान नहीं मिला ।

इस दिल में यूं ही कैसे चली आई तुम
क्या बाहर तुम्हें कोई दरबान नहीं मिला ।

लोग अक्सर कहते हैं मेरा दिल टूटा हुआ है
पर किसी को भी चोट का निशान नहीं मिला ।

हर किसी के पास यहाँ कोई ना कोई दर्द था
इस शै से कोई भी हमें अंजान नहीं मिला ।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब मिले मुझको
कहीं भी कोई बस इंसान नहीं मिला ।

वैसे तो जरूरतें हमारी ज़्यादा नहीं थी
यहाँ मगर ज़रूरत का भी सामान नहीं मिला ।

हमें तो सब लोग यहाँ बड़े ही मिले 'साहिल'
कोई भी बच्चे सा नादान नहीं मिला ।

चलो फ़िर नयी कहानी लिखते हैं
पानी पर पानी से पानी लिखते हैं।

बचपन की किताब का जो आख़िरी वर्क है
उस पर चलो नयी जवानी लिखते हैं।

दादी-नानी की कहानी के थे दो ही किरदार
खुद को राजा और किसी को रानी लिखते हैं।

रातों को तो अक्सर हमें नींद नहीं आती
उन लम्हों को हम शाम सुहानी लिखते हैं ।

जिस मीरा को दुनिया ने पगली भी कहा
उसी को सब आज शाम दीवानी लिखते हैं ।

जिसका एहसास आज भी दर्द देता है
उसको तो हम एक चोट पुरानी लिखते हैं ।

औरों से कुछ मुख्तलिफ़ है नज़रिया मेरा
हम उसके गुनाह को भी नादानी लिखते हैं ।

बेटी तो गर्व है बोझ नहीं काँधों पर 'साहिल'
तभी तो उसको गुड़िया सयानी लिखते हैं ।

पालभ सैनी

कभी कभी सोचता हूँ
समय की आलोचना
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
तनिक भी सोचना
बंद कर दूँ॥

हृदय की हर योजना
सत्य साक्ष्य खोजना
गड़े हुए मुर्दे उखाड़ना
चिर लंबित प्रताड़ना
अलाप विलाप प्रलाप
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
सब मिलन मिलाप
बंद कर दूँ॥

सम्पूर्ण सकल पुरुषार्थ
निरर्थक शब्द शास्त्रार्थ
मीन नेत्र लक्ष्य भेदना
समस्त व्यर्थ संवेदना
कुल अर्जित पीड़ा वेदना
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
अर्थहीन घाव कुरेदना
बंद कर दूँ॥

पराये सिर ठींकरा फोड़ना
असहाय की बाँह मरोड़ना
अपनों से मुख मोड़ना
शोणित सम्बन्ध तोड़ना
विष वनस्पति सींचना
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
अकारण टाँगे खींचना
बंद कर दूँ॥

दांत कसना मुट्ठियां भींचना
स्व त्रुटियों पे आँखें मींचना
झूठी कहानियां जोड़ना
खूब लम्बी लम्बी छोड़ना
रात रात अब जागना
बंद कर दूँ॥

कभी कभी सोचता हूँ
सपनों के पीछे भागना
बंद कर दूँ।

परस्पर मित्रों को लड़ाना
उनके बीच टांग अड़ाना
मिथ्या प्रेम जताना
निर्दोष को सताना
किसी का मन दुखाना
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
किसी के प्राण सुखाना
बंद कर दूँ॥

किसी का बुरा मनाना
किसी को उल्लू बनाना
दूषित विचार साथ ढोना
बहती गँगा में हाथ धोना
अनैतिक मांग करना
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
सब ढोंग स्वांग करना
बंद कर दूँ॥

घृणावश द्वेष रखना
प्रतिशोध शेष रखना
असहज डींगें हाँकना
पराये घरों में झाँकना
सर्व विचार पूँजी निवेश
बंद कर दूँ।

कभी कभी सोचता हूँ
पर हित कुशल उपदेश
बंद कर दूँ॥

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

-पालम सैनी

हलके पंखों की हलचल में

वह दूर गगन के आँचल में
हलके पंखों की हलचल में
एक पक्षी !......
क्यों थक रहा वह निज तन को
क्या ढूंढ रहा उस प्रिय जन को
जो साथ प्रात: के बिछुड़ गया
विरही का घरौंदा उजड़ गया

ये तीव्र गति जो पंखों को
तेज तेज हिलाती है
तड़पन के
चित्र दिखाती है

यह प्रात: नहीं यह रात हुई
क्यूँ पावन प्रेम की मात हुई
सूर्य देव की अलसायी
किरणें उस पर आघात हुई

किस दिशा जाय किस ओर उड़े
इस पतंग से कैसे डोर जुड़े
रह रह कर पड़ रहा वो धीमा
कितनी है सहने की सीमा

उड़कर कितनी भी ऊंचाई
मन में शीतलता न आई
कैसे कष्टों का स्रोत हटे
कैसे जीवन से मौत घटे

पहने पीड़ा का जटिल कवच
मन पागल है जायेगा बच
पश्चाताप के दल दल में
धंस रहो वो प्रतिपल बादल में

बल कहाँ जो पहुंचे मेघों तक -
हलके पंखों की हलचल में

देखो अब दोपहर हुई
यह धूप गति में ज़हर हुई
सूरज की किरणें कहर हुई
पीड़ा की ताज़ी लहर हुई

अब थक कर चूर चूर हुआ
उतना ही स्वयं से दूर हुआ
फिर उस प्रीतम के संस्मरण
मन उड़ने को मजबूर हुआ

पंखों को ढीला छोड़ दिया
स्वयं को वायु पर छोड़ दिया
अब सिर्फ हवा में झूल रहा
अपने अस्तित्व को भूल रहा

स्मरण किया फिर प्रियवर को
नयी शक्ति मिली फिर दम भर को
बलवान हवा को काट रहा
गर्मी को आंसू बाँट रहा

बाकी थी देह में जान नहीं
लेकिन फिर भी बेजान नहीं
सब तरफ खोजता प्रीतम को
पर उसका नाम निशान नहीं

कितने दर्दों की मार सहे
क्यों? शिथिल देह का भार सहे
क्यों नहीं तोड़ दे वीणा को
रहे तार न प्रेम पुकार रहे

पंछी पागल बदहवास हुआ
बेचारा बहुत निराश हुआ
ढली शाम की लाली बादल में
बाकी खग लौट चले दल में

घर जाने की इच्छा जागी -
हलके पंखों की हलचल में

दिन बीत गया अब शाम हुई
आखिर ये खोज नाकाम हुई
हाय ! कैसा यह रोग लगा बैठा
किसी तरह उड़कर मर भर कर -
आवास शाख पर आ बैठा

मूंदते पक्षी के हैं कहाँ
बैठे भी उसको चैन कहाँ
वह डाल निरंतर घूम रहा
रह रह के डाल को चूम रहा

उसको थी कदापि भूख नहीं
मुख बंद तो चक्षु मूक नहीं
आंसू न उसके थमते थे
बस धरणी पर जमते थे

लिखते थे ऐसा गीत कोई
बिछुड़े न किसी का मीत कोई
नेत्रों में गम की गर्द कोई
क्या समझे उसका दर्द कोई

कल प्रिय था उसके साथ यहीं
डूबा सूरज हुई रात यहीं
तम ने पकड़ लिया कसकर
पल में रात्रि का हाथ यहीं

हाँ !
ये रात तो मैं भी जागूँगा
एक रैन नींद से भागूंगा
देखूं आगे क्या होता है
सब भूल के पक्षी सोता है ?
क्या लेता है निर्णय ईश्वर
क्या परिणाम प्रीत का होता है

पर.....
उसमें अद्भुत बेचैनी थी
दृककष्टि पहले से पैनी थी
पल पल प्रतीक्षा में आतुर
उस वृक्ष की टहनी टहनी थी

कुछ समय रैन लेकर लपका
मैं थोड़ा निद्रा में झपका
तभी ! पक्षी पके फल की भांति
सीधा धरती पर आ टपका

किन्तु आँखें थी खुली हुई
प्रीत के जल से धुली हुई
मैं ! समझ सका कुछ कहती थी
एक विनय की धारा बहती थी

यदि प्रिय मेरा मिल जाए कहीं
किसी बात से भी घबराए नहीं
मेरे लिए उदास ना होना कभी
भर कर आँखें ना रोना कभी

उसके दिल को करार रहे
उसपे खुशियों की बौछार रहे
किसी का भी हो कैसा भी हो
मेरे प्रीतम पर प्यार रहे

रह गया सोचता मैं दिल में
क्या भाव थे हृदय कोमल में

प्रेम असीमित पलता था
हलके पंखों की हलचल में

चुनावी बारिश

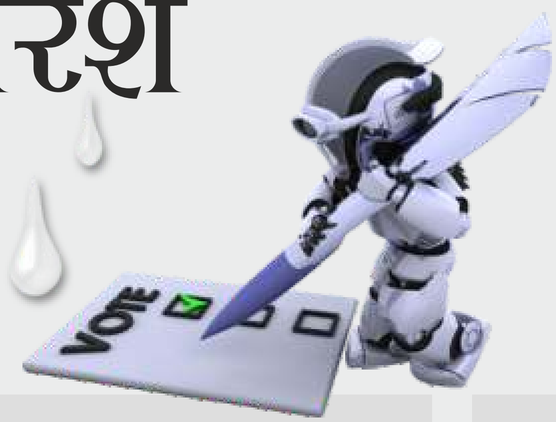

कर्मवीर मित्तल

जन मानस कब तक भटकेगा
इन सत्ता के लोलुप विकल्पों में
विलुप्त होती मानवीय संवेदनाएं
सजा है चुनावी रंगमंच यहां
अलग अलग पोशाकों में
अलग अलग टोपी पहन कर
उपस्थिति दर्ज करायेंगे सभी
पहनायेंगे टोपी सभी ।

समुद्र से पानी भाप बन कर बरसता है
पर ये तो चुनावी बारिश है
समाज का धन समाज से लूट कर
चुनावी वादों के साथ बरसेगा
हैरान मत हो
मुफ्त बिजली पानी, मुफ्त राशन
घर पंहुचेगा, मासिक भत्ते के साथ
आयेंगे बाहुबली और देंगें
तुम्हें मां बेटियों की सुरक्षा का वादा
भ्रष्टाचार में लिप्त, मिटायेंगे भ्रष्टाचार
ये तो चुनावी बारिश का मौसम है ।

चुनाव के मैदान में, हैं जादूगर सभी
किसान की भी किस्मत बदलने वाली है
सब कर्ज माफ, बिजली पानी मुफ्त
सस्ता खाद, सस्ता बीज
फसल खराब तो बीमा
ऊपर से किसान सम्मान निधि
अब तो किसान को भी चुनावी बारिश चाहिए ।

हे मूढ, कब तक रहेगा मूढ का मूढ
मत बट जाति एंव धर्म के चक्कर में
जीवन बीता झूठे वादों में
यदि अवसर चूका तो पछतायेगा
कर संकल्प चुन सही विकल्प
चुन चुन कर, चुन ऐसे प्रत्याशी
जो चुनावों में चुनावी बारिश न करें
जब बारिश हो
तुम्हारे सिर पर छाता ले खड़े हों ।

स्वरचित एंव मौलिक

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

भगवान शंकर जी का मानवता को संदेश

(लघुकथा)

बाल कृष्ण गुप्ता
'सागर'

भगवान शंकर ने मानव को सही मार्ग बताने के लिए अथक प्रयास किया है। समय-समय पर उपयुक्त मार्गदर्शन किया है परंतु समस्या यह है कि हम चकाचौंध की दुनिया में खोकर उनकी दी गई नसीहतों पर अमल करने से कतराते हैं । इसलिए हम नाना प्रकार के दुख भोग रहे हैं । मैं इस विषय में अभी कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूंगा ।

मार्कण्डु ऋषि ने अपनी पत्नी के साथ भगवान शिव जी की आराधना की । भोलेनाथ तो जल्दी प्रसन्न हो ही जाते हैं । सो उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्होंने ऋषिवर को वरदान मांगने को कहा । ध्रुव भक्त की तरह उन्होंने भगवान से भगवान को ही नहीं मांगा परन्तु एक पुत्र के लिए कहा। भोलेनाथ तो सर्व समर्थ हैं परन्तु भक्त को उसकी भक्ति का फल भी देते हैं । भोलेनाथ ने कहा कि दीर्घायु परन्तु गुणहीन या अल्प आयु और गुणवान । जो कहो। कितना बड़ा संदेश है इस बात में। ऋषि समझ गये और कहा भगवन् गुणवान ही दें। भगवान ने फिर पूछा आयु मात्र सोलह वर्ष ही होगी । भक्त ने कहा आपकी जैसी कृपा। भगवान के घर में कमी तो किसी चीज़ की नहीं। याचकों की झोली भरने में उन्हें कोई समस्या नहीं । वरदान देकर भगवान चले गए ।

कालांतर में उन्हें पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई तो उसका नाम उन्होंने मार्कण्डेय रख दिया । बालक की माता को तो अल्पआयु का सुनकर चिंता थी परन्तु ऋषिवर निश्चिंत थे। बालक थोड़ा बड़ा हुआ तो भगवान शिव द्वारा दी गई प्रेरणा से बालक को आदेश दिया कि तुम आश्रम के बाहर रहोगे और हर एक आने जाने वाले का आगे बढ़कर स्वागत करोगे ।

पिता की आज्ञानुसार बेटा प्रत्येक आगंतुक के पास भाग कर जाता और उन्हें प्रणाम करता । आज-कल का बेटा तो कहेगा कि पापा चौकीदार रख लो । हर आगंतुक उसे आशीर्वाद देकर कहता 'चिरंजीवी भव'। ऐसा करते करते बालक सोलह साल का हो गया ।

समय आ गया था और यमराज के दूत उस बालक को लेने के लिए आये । हर रोज़ की तरह बालक ने आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम किया । महापुरूष कहते भी हैं कि 'आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा'। माता-पिता की आज्ञा का बिना किसी तूं तड़ाक के पालन करना बहुत बड़ा यज्ञ होता है । दूतों को ज्योंहि प्रणाम किया उनके मुंह से भी शब्द निकलने ही वाले थे कि चिरंजीवी भव । शब्द जीब्हा और दांतों के बीच फंसे गये । उन्हें ध्यान आया कि हम तो इसे यमलोक ले जाने के लिए आये हैं । बालक के शिष्टाचार के आगे नतमस्तक हो कर वापिस चले गये और कहा महाराज यह काम हम न कर पायेंगे। अब क्रोध कर यमराज नागपाश हाथ में पकड़ भैंसे पर सवार होकर वहां आये । बालक ने भागकर उन्हें भी प्रणाम किया । उन्होंने अपना अस्त्र उठाया ही था कि बालक ने घबरा कर शिवलिंग को सीने से लगा लिया । शिवलिंग से भगवान शंकर तुरंत प्रकट हुए और बोले 'यमराज! अपनी मर्यादा में रहो'। वर्षो से इसने चिरंजीवी भव के आशीर्वाद अर्जित किये हैं । वह आशीर्वाद निष्फल नहीं जायेंगे। मैं इसे चिरंजीवी भव का वरदान दे रहा हूं । यह बालक दीर्घकालीन तक जीवित रहेगा। भोलेनाथ ने बताया है कि सदा आशीर्वाद अर्जित करने का प्रयास कीजिए । प्रणाम करने से मत चूकिए।

-बाल कृष्ण गुप्ता
'सागर'

जीवन के रंग

जीवन के कैनवास पर
समय-समय पर सदा
रंग लगते ही चले गये
काले, हरे, लाल, नीले
हरे, मटमैले, गुलाबी पीले
चित्र बनते ही चले गये
कुछ मनमोहक थे पर
कुछ डरावने भी थे
जीवन की कैनवास बडी़ थी
चित्रों की गिनती भी बडी़ थी
मन ने कहा चित्रों को देखो
बार बार पलट कर तो देखो
बुद्धि ने कहा मत देखो
बिल्कुल भी मत देखो
जो बीत गया सो बीत गया
अच्छा था या कुछ बुरा
कैनवास होगा तो रंग लगेंगे ही
रोज़ रोज़ नए नए रंग लगने दो
अब नए नए चित्र बनने ही दो
वक्त के साथ साथ बदलने दो
पर तुम मत बदलो अपना मार्ग
अपना लक्ष्य भी तो मत बदलो
अपनी सोच भी कभी न बदलो
बस लक्ष्य की ओर बढ़ते चलो
कैनवास पर हर घड़ी रंग लगने दो

तुम कौन हो

ऐ बादलों !
सच सच बताओ
तुम कौन हो
तुम कुछ काले
तुम कुछ गोरे
क्या मानवों की तरह
तुम भी रंगभेद के
रोग से ग्रस्त हो
तुम्हारे दो गुटों में
टकराव तो मैंने भी देखा है
आसमानी बिजली भी साक्षी है
तुम्हारे टकराव की
तुम तो धरती से बहुत ऊपर हो
फिर भी मानवों की तरह
छोटे बड़े के भेदभाव के
रोग से भी ग्रस्त हो
कोई छोटा कोई बड़ा
कोई बहुत बड़ा
कोई समूह में
कोई एकदम अकेला
क्या अमीर गरीब का भेदभाव
आप में भी होता है
कुछ तो अपनी जमापूंजी
धरती माता के साथ सांझा
कर हर्षाते हैं
कुछ बिने बरसे ही सरक लेते हैं
कुछ यूं हीं आकाश में टहलते हैं
धरती के अशांत मानवों की तरह
तुम भी निरंतर दौड़ते रहते हो
इधर से उधर,उधर से इधर
किस वस्तु की तलाश में
या किसी के आने की इंतज़ार में
अरे भाई! सच सच बताओ
क्या तुम भी मानवों की तरह
सामाजिक रोगों से ग्रस्त हो
क्या तुम भी मानवों की तरह
दीन दुनिया से त्रस्त हो
सच सच बताओ
तुम कौन हो

रश्मी शर्मा

रश्मी की डायरी से कुछ पन्ने

नींद नहीं आती है तुझको
आ मैं कोई गीत सुनाऊं

छू लूं अफ़सुर्दा आंखों को
फाहा फाहा चाँद लगाऊँ

बन्द हुई पलकों को चूमूँ
होंठों से माथा सहलाऊँ

बांहों का सिरहाना दे कर
सुलझी लट को फिर उलझाऊं

नींद परी को रख पहरे पर
ख़्वाब का बिस्तर रोज़ लगाऊं

दीपक कब तक साथ जलेगा
सो जा तू मैं भी सो जाऊं

कितने झूठे हैं सारे हंसते लोग
रहते अक्सर उदास सच्चे लोग
दिल हमारा न तोड़िए साहिब
गोश-ए-दिल में हैं आप जैसे लोग

दूर की बात, सुन न पाओगे
दूर होते हैं पास रहते लोग

दिल दुखाने की बात करते हैं
हाय ये पत्थरों में रहते लोग

ग़म-ज़दा जो दिखाई देते हैं
बात कुछ भी नहीं है ---कहते लोग

'रश्मी' इस पार इक समन्दर है
और उस पार थोड़े मीठे लोग

-रश्मी शर्मा

रश्मी की डायरी से कुछ पन्ने

कल मैंने इक सपना देखा
सपने में तुम थे और मैं थी

एक पहाड़ी ऊंचा रस्ता
कल कल करता बहता पानी

तेरे सर का ताज़ था सूरज
मेरे रुख पर चांद की लाली

नदिया झरना जंगल और फिर
देखा फूल इक लाल गुलाबी

तूने झट से तोड़ लिया था
मैंने भी काकुल संभाली

नदिया से निकली इक गहना
नील नदी की नील परी सी

घुटनों तक फैले थे गेसु
आंखें नीली और कजरारी

तूने उसको फूल दिया तो
मैंने पट से आंखें खोली

मेरी मुट्ठी में दे अक्षर,
बड़के को संगीत थमा कर
छोटे को दे एक्टिंग पापा,
इतनी जल्दी चले गए क्यों
हुनर जो हम को सिखलाए थे,
परखो और फिर टोको हमको
कमियां हम को समझाओ ना
पापा फिर से लौट आओ ना

जब भी कोई ग़ज़ल हूं कहती,
चाहती हूं मैं सुनो आप वो
लेकिन आप नहीं हो पापा,
कविता नज्में फिर से लिखो
लिखना मुझको सिखलाओ ना,
पापा फिर से लौट आओ ना

मैं फरमाइश किया करती थी,
रोज़ सवेरे इक गाने की
आप सुनाने लगते थे जब,
मम्मी डांट दिया करती थी
चिढ़ती थी वो उस गाने से,
तेरी दुनियां में दिल लगता
ही ना मालिक, ऐसा कुछ था,
बोल वो याद दिला जाओ ना

पापा फिर से लौट आओ ना ,
पापा फिर से लौट आओ ना

बड़का जब भी गाना गाता,
पेटी वाला बाजा बजता
आप सिखाया करते थे ना,
आप के जैसा ही है दिखता
अब वो खूब बजाता बाजा,
ऊंचे सुर में खूब है गाता
लेकिन आप को मिस करता है,
राग नया कोई बतलाओ ना
पापा फिर से लौट आओ ना ,
पापा फिर से लौट आओ ना
छोटा एक्टिंग का माहिर है
अक्सर आप की एक्टिंग करता
बचपन में मम्मी बनता था
अब दोनों की नक़ल है करता
आप के नक्श-ए-पा पर चलता
आप को यादों में है रखता
जीवन भी तो इक नाटक है ,
नायक बनना सिखलाओ ना
पापा फिर से लौट आओ ना,
पापा फिर से लौट आओ ना

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'

तरुनिल के ज़हन से कुछ ग़ज़लें

यूं तो मेरी सच बयानी और है
सुन रहे हो तुम कहानी और है

इश्क के दरिया का पानी और है
गीत ग़ज़लों की रवानी और है

दूसरों की सोच का हम क्या करें
क्योंकि उनकी बद गुमानी और है

है लिखत में और ही तहीर ये
याद कुछ हमको जुबानी और है

शे'र पूरा मुफ्क बिना होगा नहीं
ढूंढ लें गर कोई सानी और है

बात करने से पता चल जाएगा
खानदानी की निशानी और है।

ये जिंदगी कज़ा ही नहीं इक सज़ा भी है
हर शख्स हँस रहा है मगर गमज़दा भी है

अक्सर जवानी में सभी मगरूर रहते हैं
पैसा या रूप होता बड़ा बेवफा भी है

कह तो दिया बदलने लगे हैं हुजूर आप
क्या आपके करीब कोई आइना भी है

मुर्दों पे डालते रहे चादर नयी नयी
जिंदा का तन ढके ये नेक मशविरा भी है

जो लोग लड़ रहे हैं जमीं जर के वास्ते
क्या साथ ले गया वो सिकंदर पता भी है।

गुजरते हैं निकट से वो मगर तेवर दिखाते हैं
ज़रूरत पड़ने पर जो सर सदा अपना झुकाते हैं

जो अपना बनके अपनों के विरुद्ध साजिश रचाते हैं
वही तो आस्तीनों में छुपे विषधर कहाते हैं

किसी की मीठी बातों से कभी धोखे में मत आना
लगाते लोग जो मक्खन छुरी वो ही उठाते हैं

सचाई को छुपाने का चलन है आज दुनिया में
यहाँ हाथी भी कब खाने के दाँतों को दिखाते हैं।

मंज़र मुहब्बतों का कभी खो नहीं सका
तेरी दमक (छवि) थी आँख में मैं रो नहीं सका

मन से हो मन की बात यही चाहता था मैं
मनमीत मेरे मन का कोई हो नहीं सका

नाराज़ हो के घर से निकल तो लिए मगर
कोई जड़ों से रूठ के जी तो नहीं सका

लहजा बदल रहा है जिगर के दुलारों का
नासूर का निदान मगर हो नहीं सका

पहचान चाहिए तो ज़रा कोशिशें भी कर
मेहनत बगैर फ़स्ल कोई बो नहीं सका।

फ़रवरी महकता है बसंत से
कविताएँ सुंदर सुंदर बाग बगीचे काढ़ने लगती हैं
कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कवि मन का
कैनवस निरा श्वेत हो या
गाढ़ा काला जिस पर सिवाय प्रेम के
कोई और रंग चढ़ता ही ना हो

फ़रवरी में खिलता है गुलाब भी बेहिसाब
देखते हैं प्रेमी बड़ी ही हसरत से
बड़े चाव से तकती है प्रेमिका गुलाब को
फिर डायरी में रखते हुए
प्रेम की महक से महकती जाती है

बचाकर रखेंगे फूल ही दुनिया में
मासूमियत, नज़ाकत , कोमलता और प्यार
फूल चेताते रहेंगे
हीरे जवाहरात अपनी चमक गंवा
एक दिन लॉकरों अलमारियों में
पड़े रह जाएँगे, औरतें भूल जाएँगी कब क्या
उपहार में दिया था तुमने लेकिन नहीं
भूलेंगी मरने तक दिए गए गुलाब
रजनीगंधा या कोई नीला पीला फूल भी
सूख गया होगा जो किसी किताब
किसी पुरानी डायरी में जिसे
गाहे-बगाहे अपने फुरसत के पलों में
खंगालती रहेंगी, ठहरी ये कसक
हंसती भी है,रोती भी है

तन मन के हर घाव का मरहम बन
ये सूखा हुआ गुलाब
जीवन की ढलती साँझ में रोशनी बन
उस पार उतार देता है

क्षणभंगुर जीवन में प्रेम के अलावा
कुछ शाश्वत नहीं

है क्या??????

सीमा गुप्ता

आना जाना साँसों का

साँसों का आना जाना नहीं
तलाश करता कोई बिम्ब कोई उपमा
कोई बेहतरीन पंक्ति या
दमदार समाप्ति
लयबद्ध संगीत सी उतरती चढ़ती जाती हैं साँसें
किसी आलोचना, प्रसिद्धि से विलग
संसार के व्यापार से परे

धीरे-धीरे खोलती हैं राज़
खोलती हैं तुम्हारे ही मन को तुम पर
तुम्हारे डर से जूझती हैं
कभी झिझक को बेपर्दा कर देती हैं
बेकार सामान की तरह फेंके जाने की
घबराहट, मान अपमान की दरिद्र सी सोच
की आँच में जलता है हृदय
उखड़ती हैं सांसें , चेतावनी है

कभी भी रुक सकती है धड़कन
कभी भी लौट सकती हैं वापस
वहीं जो केंद्र है समस्त जगत का
बिना आवाज़ किए चुपचाप
किसी नज़्म के मुकम्मल स
हो जाने की तरह
मन को असीम शांति देती हुई
रूह को जिस्म की क़ैद से
आज़ाद कर देती हैं

चुपके से रहती हैं
चुप सी बहती हैं
चुप से ही सब कहती हैं
चुप की कला सिखातीं हैं

तुम इनकी चुप का एतबार मत करना''.

-सीमा गुप्ता

टीस

घर में दाखिल होने से पहले
शहर में दाखिल होना होता है
शहर की हद पहले पहचान लेती है
फिर मोड़, गली कूचा ,बाज़ार ,सड़कें
सड़क मानो आपको अपने आप संभाल लेती है
आँख मूँदकर भी चलो तो पहुँच जाते हैं

मुझे भी पहचाना, गले लगाया इन सबने
बस एक घर ही पराया हो गया
ना गले लगाया
ना भीतर ही बुलाया
ना कोई आवाज़ ही दी

फिर भी मेरी उम्मीद क़ायम है
रेगिस्तान में भटकती , छाँव तलाशती
इसी आंगन को तकती हूँ
ऐसा एक मैं ही नहीं
सारी बेटियाँ तकती हैं
आवाज़ों, दस्तकों को तरसती हैं
बुलावे का इंतज़ार करती हैं
बेटियाँ क्यों बड़ी हो जाती हैं
बड़ी होकर वो बहुत अकेली हो जाती हैं
अकेलेपन की टीस उनकी
आँखों के इर्द-गिर्द जम जाती है
आँखों का चमकीला रंग
सबसे ख़फ़ा हो जाता है
और फीका पड़ जाता है

मुक़द्दर है पराया हो जाना
परायेपन की टीस बराबर उठती रहती है
अनदेखी रह जाती है
कोई समझ नहीं पाता
वो भी कह नहीं पातीं

समर्पित प्रेमिकाएँ

पुरुष बहुत कम ही कहता है
कभी ही बोलता है कि वो प्रेम करता है
हर रोज़ मिलने की चाह रखता है
देखना भर उसे खुश्बू से भर देता है
और छू ले तो मदमस्त पवन सा
झूम झूम जाता बेचैन हो
पहले सा नहीं अलग आदमी हो जाता है
पुरुष नहीं थोड़ा स्त्री हो जाता है
थोड़ा कोमल थोड़ा संकुचित
और अधिक प्रेम से भर जाता है
ये सब उसने कहा नहीं किंतु
प्रेमिकाएँ समझ जाती हैं
सच मान लेतीं हैं
इसी के आसपास अपना संसार
रच लेती हैं
पुरुष ऐसा ही होता है
थोड़ा चुप और थोड़ा गुम

प्रेम फलीभूत हो उसके लिए
एक को बेहिसाब प्रेम करना होगा
बार बार मिटकर , टूटकर
बिखरकर संवरना होगा
इसी में आशा रहती है
जीवन के मुश्किल वक्त में भी
प्रेम के फूल खिले रहने की

समर्पित प्रेमिकाएँ चुपचाप
बस प्रेम करती हैं
दुनिया को जीने लायक़ बनाती हैं'..

प्रेमिकाएँ ऐसी ही होती हैं
उन्हें ऐसा ही होना चाहिए

दुख इस बात का है
वो हंसती तो हैं मगर
बहुत उदास रहती हैं और
अपने प्रति तो बेहद उदासीन रहती हैं''

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

भारत माता

जय जय जय जय भारत माता
जय जय जय जय भारत माता।

हम सब तुमको शीश निभाये
मिट्टी से हम तिलक लगाये
तुम से ही हम जीवन पाये
तुम हो हमारी भाग्य विधाता।

जय जय जय जय भारत माता।

राम ने माता माना तुझको
गुरूओं ने भी पूजा तुमको
पीरों ने भी चाहा तुझको
हर कोई तेरे गीता है गाता।

जय जय जय जय भारत माता।

तूने सबसे प्यार किया है
सब पर ही उपकार किया है
हम सबको खुशहाल किया है
तुम सा नहीं कोई दाता।

जय जय जय जय भारत माता।

मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे
यहां बहुत है प्यारे प्यारे
हर मजहब के लोग यहां है
सबका तुम से गहरा नाता।

जय जय जय जय भारत माता।

नाम तेरा चमकायेगें
तेरी खातिर मिट जायेगें
खून से अपने महकायेगें
गुलशन तेरा हम ए माता

जय जय जय जय भारत माता।

प्रेम विज

पेड़ होना परम्परा है

जैसे पेड़ का जुड़ना जरूरी है धरती से
लहरों का जुड़ना जरूरी है नदी से
और धूप का जुड़ना जरूरी है सूरज से
वैसे ही

आदमी का जुड़ना जरूरी है परम्परा से
पेड़, लहरें और धूप
धरती की शाश्वत परम्परायें
ही तो हैं दरअसल

पिता
जैसे नींव है आदमी की
वैसे ही परम्परा नींव है
पिता की

जैसे धरती का अस्तित्व सूरज से
वैसे ही आदमी का अस्तित्व
परम्परा से है
दिन के बाद
रात का आना और रात के बाद
फिर दिन का उदित होना
परम्परा का आदिम रूप ही तो है

और धरती जो घूम रही है
सूरज के गिर्द वही नहीं है क्या परम्परा
धरती का अपनी मिट्टी से जुड़ाव

दरअसल लौटना
अपनी मिट्टी की ओर
परम्परा की ओर लौटना है
और परम्परा पिता है
नदी है
धूप है

पेड होना भी परम्परा है
और मानवीय अस्मिता को अर्थ
मिलना भी
परम्परा ही है।

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

डॉ. अरुण कुमार त्रिपाठी

जीवन में आया नवल वर्ष

जीवन में आया नवल वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें।
इस महाजागरण के युग में
कुछ नवल कीर्ति नवगान भरें॥

दीन- दुःखियों का दर्द हरें
मानवता का कल्याण करें।
जीवन में आया नया वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें॥

विश्वबन्धुता का आगाज करें
भाईचारे का पाठ पढ़ें।
अपने भारत के लिए नई
प्रेरणा नवल उत्थान लिखें॥

जीवन में आया नया वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें॥

कृषकों का उत्थान करें।
मजदूरों का हम दुःख हरें॥

पददलितों का उत्थान करें
आओ हम स्वर्ण विहान लिखें॥

जीवन में आया नवल वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें॥

सत्य और अहिंसा का पाठ पढें
हम स्त्री का सम्मान करें।
नारी की पूजा करके हम
घर में देव का वास करें॥

जीवन में आया नवल वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें॥

सज रही अयोध्या की नगरी
मन्दिर का हम दीदार करें।
इस नवल वर्ष की बेला में
प्रभु राम का हम श्रृंगार करें॥

जीवन में आया नवल वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें॥

सियाराम जपें हनुमान जपें
सरयू में स्नान करें।
पाकर प्रसाद हम जीवन को
प्रभु चरणों में कृतार्थ करें॥

जीवन में आया नवल वर्ष
आओ नूतन निर्माण करें॥

संतोष गर्ग

चिड़िया

चीं-चीं-चीं-चीं करती चिड़िया ।
फुर्र- फुर्र कर उड़ती चिड़िया ॥
भालू, चीता, शेर, सांप हो,
नहीं किसी से डरती चिड़िया ॥

मुझसे भी पहले उठ जाती ।
सुंदर-मनहर गीत सुनाती ॥
नन्हें मुख में तिनके लेकर,
अपने घर को स्वयं बनाती ॥

तुम भी आँगन पेड़ लगाना ।
कोयल, तोते, मोर, बचाना ॥
रखकर थोड़ा दाना-पानी,
सृष्टि का मंगल कर जाना ॥

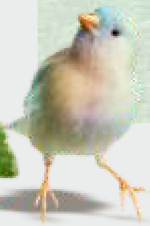

रंग

नकली रंगों से
कुदरत के रंग अच्छे
प्रेम की भाषा
हर कोई समझे
समझें नाजुक बच्चे ।
नकली रंगों से ....॥
हरे रंग के बाग बगीचे
फूल है रंग रंगीले
जामुनी, बैंगनी, लाल- गुलाबी कुछ है
नीले पीले
चंदन सी खुशबू से महकें
बच्चे मन के सच्चे ।
नकली रंगों से ..॥
कल-कल करती नदिया कहती बच्चों
कभी न रुकना
यदि हो चाहते पर्वत होना
सब के आगे झुकना
बस मेरा संदेश यही ..
सुनो ! बदामी लच्छे
नकली रंगों से
कुदरत की रंग अच्छे ..॥

नदिया

नदिया है कहती
कल- कल बहती ।
झुक कर रहना
कुछ ना कहना ॥
कोई जो फैंके
कंकर- पत्थर ।
चुप ही रहना
सब कुछ सहना ॥
बढ़ते जाना
खोकर खुद को
सागर होना ।
हँसते रहना
कभी न रोना ..
नदिया है कहती
कल कल बहती..॥

गंगा का है इस देश में
सबसे ऊँचा नाम ।
भारत करता आया सदा से,
गंगे का सम्मान ॥
जन-जन के अटके हैं इसमें
अंत समय तक प्राण ॥
भारत की धरोहर नदियाँ
आन बान और शान ॥

यादों के बक्से से

शिल्पा गुप्ता

मन के किसी कोने में, सांकल लगे बक्से में
बंद हैं कुछ यादें, खामोशी के कड़े पहरे में ।

वक्त की धुल में धुंधलाई, कभी जान बूझ कर बिसराई
ताले हैं जो लगे खुलने, आँख मेरी भर आई ।

एक लम्हा खुशी का है, साथ आई थी गम की परछाई
देखकर हाथ किसी के हाथ में, जब पाई थी रुस्वाई ।

एक आंसू दर्द का है, आज भी देता है दुहाई
वजूद को मेरे रोंदा किसी ने, ना जी और ना मर पाई ।

एक मुस्कान कुछ पाने की, बेदर्द दुनिया को रास ना आई
बमुश्किल बचाया दामन, ज़ालिम ज़माने ने आग लगाई ।

एक मुलाक़ात फरेब से है, मौकापरस्ती की बजी शहनाई
रूबरू हुई सच से कुछ ऐसे, विश्वास की बाती डगमगाई ।

फेहरिस्त ये बहुत लम्बी है, जब भी आयी सैलाब लाई
जब-जब यादों के बक्से से, ये यादें चुपके से बाहर आई ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

नीतू गर्ग

माँ का मन

मैं आज एक कविता कहती हूँ,
उस माँ को समर्पित करती हूँ,
जो रहती है वृद्धाश्रम मे,
उसका मन वर्णित करती हूँ ।

कातरता थी उन आँखों में,
और नैन बिछे थे राहों में,
शायद वो लेने आये मुझे,
भर लूँ ममता की बाँहों में
मै जैसी थी बरसो पहले
मै आज भी बिल्कुल वैसी हूँ
मै आज एक कविता कहती हूँ ।

क्या मुझसे कोई भूल हुई,
क्यों मै आँखों में शूल हुई
माँ होती अगर धरती पे खुदा
फिर क्यों इतनी प्रतिकूल हुई
वो भूल गया पर याद मुझे
उसकी हर रोज सताती है
मै आज एक कविता कहती हूँ ।

क्या ममता में कोई कमी रही
मेरी खातिर ना जमीं रही
क्यों आँसू हैं उन आँखों मे
जो उसकी खातिर जगी रही
ऐसे ही क्या उस ममता का
संताने कर्ज चुकाती हैं
मै आज एक कविता कहती हूँ ।

जिसे अपना दूध पिलाया था,
ना भूख कभी सुलाया था,
क्या फर्ज यही उस पुत्र का है,
जिसे कष्ट सहनकर जाया था
ये बात मगर तब समझोगे,
जहां आज मै खुद को पाती हूँ
मैं आज एक कविता कहती हूँ ।

ख्वाहिशें इंसा जा ठहर तो सही,
सांस लेने तो दे जिंदगी थक सी गयी,
तेरा क्या है, तू
कभी मुकम्मल ना हुई,
एक पूरी हुई तो दूजी आ गयी,
पूरा तुझे करने को ,
हुए लाखों पल कुर्बान,
बस हर घडी ये सोचा,
कैसे पूरे हो अरमान,
मतलबी बनाया इंसा को तूने,
और बनाया बेईमान ।
गुलामी तेरी करके भूला,
अच्छा, बुरा नादान ।
खिलवाड किया कुदरत से,
जिसपे सत्ता है ईश्वर की ।
नादान मान बैठा उसे,
जागीर अपने हक की ।
मैं ये नही कहती कि,
हसरतें ना हो मन में ।
रंग खूबसूरत बिखरे,
इनके होने से जीवन में ।
बस लगाम हो थोड़ी सी,
रफ्तारे- हसरतों को ।
कुदरत का लगा दांव,
पूरा करने हसरतों को ।

घूमती रहती हैं मन के आंगन में,
कितनी ही मृगमरिचिकाएं,
भागते है हम उनके पीछे,
जैसे चंचल मन की प्रेमिकाएँ ।
पाने को तो पा भी लेते है उसे,
संतोष की कुछ बुंदे भी दे जाती है हमे,
हम जज्ब भी ना कर पाए, आ जाती है
नये रूप मे एक और मरीचिका,
भस्म कर देती है उन बूंदो को,
हम अतृप्त से रह जाते है,
चल पडते है फिर से उसी तलाश में
स्वर्णिम स्वप्न जैसी है वो कोई,
चमचमाती सी आँखों में,
क्षितिज जैसी लगती है,
जैसे छू लेंगे उसे हम जरूर,
मगर हो जाती है आँखो से,
बहुत दूर, बहुत दूर बहुत दूर ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

पिता होते हैं पर्वत से

पर्वत से भी ऊँचा है केवल एक किरदार पिता का
औलादें ही होती हैं बस पूरा संसार पिता का

चाचे, ताए बहुत से रिश्ते नदिया झीलों की मानिंद
सब रिश्तों से ऊपर होता है सागर सा विस्तार पिता का

अपनी हसरतें दफ्न हृदय में कर सकता जो जीवन भर
हम जो मांगे मिल जाता है ऐसा है इकरार पिता का

पानी सा रिश्ता है उनसे घुल मिल जाये ऐस कद्र
घनिष्ठ मित्र सा रहता है बच्चों से व्यवहार पिता का

डांट में भी जो शिक्षा देता वो सच्चा मार्ग दर्शक
जिंदगी को जीना सिखलाता ऐसा है संस्कार पिता का

जीवन भर संघर्ष है करता आंधी आए या तूफ़ान
मंज़िल पर जब पहुंचे बेटा हो सपना साकार पिता का

खारा पानी आँखों में रख बेटी की जो करे विदाई
बस ऊपर से जो छलके वो होता है प्यार पिता का

सुभाष भास्कर

धरा

धरा हरी ममता भरी देती खूब प्यार
धरा का करना चाहिए मां जैसे सत्कार
गोद में इसकी पलते, खेलते- कूदते हुए जवान
इसी पर भव्य इमारतें बनती इसी पर बनते मकान

सुंदर बाग बगीचों में यहां खिलते सुंदर फूल
इसी पर मंदिर, मस्जिद बनते इसी पर बनते स्कूल
सुंदर वनस्पति इसकी देती तरह-तरह के सब्जी फल
सूखे मेंवे, शक्कर ,शहद से भरा है इसका आँचल

रूस या हो यूक्रेन त्यागना होगा युद्ध का मार्ग
मिल बैठकर मसला सुलझाएं निकलेगा सही हल

बमों और मिसाइलों से मत रोंदो धरती माता
मानवता का धर्म हमें बस यही है सिखलाता

विश्व शांति के लिए सबको करना है प्रयास
करना ना पड़े फिर बाद में हमें पश्चाताप

युद्ध छोड़कर मानवता का सब करो प्रचार
धरा हरी भरी होगी देगी खूब प्यार

करवाचौथ त्यौहार

कोरोना ने जो कर दिया था सब कुछ बेरंग ।
त्योहारों का सीजन अब भरने लगा है रंग ।
सुहागिनों का खास है करवाचौथ त्योहार ।
सरुचीपूर्ण ढंग से सजती हो तैयार
पहनती पीले, गुलाबी, संतरी सूहे लाल लिबास
सुहाग पर्व के होते हैं रंग यह ख़ासमख़ास ।
युवतियाँ पहनती साड़ियां और शादी के लहंगे
सजीले सुंदर रानीहार, पहनती महंगे महंगे ।
माथे टीका कान में झुमके, कलाई पे कंगन,
पायल करती रुनझुन और चूड़ियां करती खनखन
दुल्हन सी कर रूप सज्जा मंहदी रचाकर हाथों पर
सखियां के संग मस्ती करती मिलकर सभी दिनभर
सास बहू को सरघी देती और सुंदर उपहार
ननदें भावी से करें इस दिन बहुत ही प्यार
दिनभर भूखी प्यासी रहकर करती हैं उपवास
मुंह अंधेरे सरघी खाकर व्रत करती शुरूआत
चांद को अर्घ्य देकर खोलती व्रत जब पड़ जाती रात
उनके आत्मबल की देनी होगी दात
पवित्रता से मनाती हैं करवा चौथ त्योहार
सदा सुखी समृद्धि रहे सौभाग्यवती नार ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

आशिमा राज वार्ष्णेय

आरामगाह

(लघुकथा)

"अरे सरला जी, बड़े दिनों बाद दिखाई दी हैं आप, कहां रहती हैं, बेटे के पास गई थी क्या ?"
गहरी साँस लेते हुए सरला जी बोली, "हां सुधा जी, अब तो पोता छह महीने का हो गया है। सोचा एक बार घर का चक्कर लगा लूं। सो आ गई। कुछ दिन यहां रहकर बिटिया के पास जाऊंगी। उसका सातवाँ महीना चल रहा है।
"अरे वाह ! डबल खुशखबरी ! माला की सास आएंगी या आप ही रहेंगी उसके पास।
"अरे, उनकी तबियत अच्छी नहीं रहती है। मैं ही जाऊंगी। सोचा कुछ दिन आराम कर लूं वरना खुद के लिए तो समय ही नहीं मिलता है। अब पन्द्रह दिन अपने हिसाब से रहूंगी।"
"अब तो आप घर किराए पर रख कर बेटे के पास ही शिफ्ट हो जाइए।"
"इस उम्र में मायका तो रहा नहीं जहां अपनी मनमर्जी चले। यही घर अब आरामगाह है जहां आकर खुद के लिए जीती हूं। पुरानी यादें भी ताज़ा हो जाती हैं और बच्चों को भी कुछ समय अपने हिसाब से चलने का वक्त मिलता है।"
सुधा जी सोच रही थी "सही बात है ! जब बेटा बहू बच्चों के साथ दो-चार दिन के लिए बाहर जाते हैं तो अकेला रहना कितना भाता है। वास्तव में घर आरामगाह हो जाता है।

संकल्प

हाथ में पुस्तक थामे
बेटी को तन्मयता से पढ़ते देख
माँ खो गई विचारों में,
काश ! अपनी शिक्षा के अधिकार हेतु
डट कर खड़ी होती,
भाई के समान
इच्छानुसार पढ़ी होती,
तो शायद
जीवन बेहतर रहा होता,
लेती हूं संकल्प,
अब गलती ना दोहराऊंगी
बिटिया को खूब पढ़ाऊंगी,
अपने पैरों पर खड़ी रह
जिएगी स्वभिमान से,
ये अफसर बिटिया मेरी है
कहूंगी अभिमान से,
किसी बात के लिए
अपना मन नहीं मारेगी,
अपना जीवन
अपनी शर्तों पर गुजारेगी।

अतीत और भविष्य

सागर तट पर
सुरमई सांझ के झरोखे से
मैंने देखा ,
अपना अतीत और भविष्य...
अपनी ही धुन में मस्त
युवाओं को निरख
स्मरण हुई...
बेपरवाह ,मस्ती से भरपूर
स्वच्छंद युवावस्था...
जीने की ललक,
कुछ कर गुजरने की चाहत,
नादानियों का पुलन्दा...
जिसमें थी
समय की बेकद्री,
स्वास्थ्य के प्रति की गई लापरवाही,
बुजुर्गों की सलाह का अनादर,
फिर झुकी कमर,
छड़ी ले घूमते वृद्ध को देख
लिया संकल्प
स्वास्थ्य ही धन है...
सटीक है यह मंत्र
इसे ही जीवन सूत्र बना
वक्त का पाबंद रहना है...
आज के साथ-साथ
भविष्य भी संवारना है...
पूर्व में अनायास की गई
सभी भूलों को सुधारना है
हंसते मुस्कुराते
दुनिया से विदा हो जाना है।

गिद्ध

(लघुकथा)

सुरेश पुष्पाकर

शवों के ढेर से कहीं सिसकने की आवाजें आ रहीं हैं। दूर दूर तक कोई नहीं है सुनने वाला सिवाय उन गिद्धों के जो अपने शिकार को नोच खाने की प्रतीक्षा में हैं।

"क्या कहीं सूखा या अकाल पड़ा है, ये त्राहिमाम कैसा, मानवता क्यों सिसक रही है।" एक वृद्ध गिद्ध ने दूसरे युवा गिद्ध से पूछा? उत्तर मिला गिद्धों की एक नई प्रजाति ने जन्म लिया है, जो अपने शिकार को पहले शव बनाते हैं, फिर उसकी मृत्यु पर दुःख जताते हैं और फिर उसे नोच नोच कर खाते हैं।

कौन हैं वे, कहाँ से आये? वृद्ध गिद्ध ने आश्चर्यचकित हो पूछा? युवा गिद्ध ने उत्तर में कहा "मानव जब राजनीति में आता है, और फिर राजनीतिक शक्तियों को पाने की लालसा में मानवता की तिलांजली दे देता है। तब वह राजनीतिक गिद्ध कहलाता है।"

उत्तर सुन कर वृद्ध गिद्ध बोला ये तो हमें बदनाम कर रहे हैं। यह तो अपनों पर ही झपट रहे हैं। हम तो अपने क्या दूसरे प्रजाति के जीवों के भी मरने तक इन्तज़ार करते हैं।

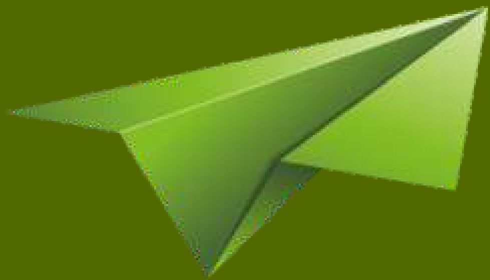

समाचार वार्ता

NEWS GLOBAL